Developmental Psychology : Developmental Tasks Based on Age of Development

मनुष्य का जीवन बाल्यकाल से बुढापे तक अनेक अवस्थाओं से गुजरता है. प्रत्येक विकास की अवस्था में मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन घटित होते हैं. बच्चे में उपस्थित genes इस प्रकार हो रहे विकास की प्रक्रिया का निर्धारण करते हैं किन्तु पारिस्थितिकी स्थितियां बच्चे के विकास की प्रक्रिया को काफी हद तक प्रभावित करती हैं. मनुष्य के विकास की प्रक्रिया में विभिन्न अवस्थाओं का मुख्य रोल होता है. हर अवस्था में मनुष्य में शारीरिक, बौद्धिक, भाषा तथा सामाजिक एवं भावनात्मक परिवर्तन होते हैं.

A. Infants | Babies (0 - 2 years)
B. Toddlers | Pre-schoolers (2 - 5 years)
C. School Age Children (6 - 12 years)
D. Adolescents | Teenagers (13 - 18 years)

प्रत्येक अवस्था में शारीरिक और मानसिक प्रक्रिया चलती रहती है. हमारा यहाँ पर adolescents teenagers पर अध्ययन और विकास की प्रक्रिया को समझना है. यही वह अवस्था है जो वास्तव में parents के लिए एक challenge पैदा करती है. यही वह अवस्था है जब बच्चे में passive-aggressive behavior अर्थात् I will do it in a minute वाली भावना उत्पन्न करती है या फिर बच्चे में self consciousness तथा self doubt (I am not good at anything) या moodiness (Leave me alone) जैसे विचार उत्पन्न करते हैं.

यह वह समय है जब बच्चा अपने आप को परिभाषित करने लगता है. इस अवस्था में कौशल विकास तीव्र हो जाता है. वह अपने आप को college के लिए या फिर जॉब ट्रेनिंग प्रोग्राम के लियें तैयार करने लगता है. बच्चे में उपस्थित टैलेंट perfection प्राप्त करने लगते हैं. सामाजिक कुशलता को परिपक्व किया जाता है. relationship पर गम्भीर चिन्तन होने लगता है, सहभागियों का दबाव बढ़ने लगता है. इसके साथ बहुत सारी चीजें लुभावनी लगने लगती हैं.

इस अवस्था में बच्चे को अपने अभिभावकों से ज्यादा देखभाल की ज़ूओर्त पड़ती है. वैज्ञानिक खोजों से यह ज्ञात हुआ है कि जिन घरों में positive family वातावरण होता है तथा बच्चों और अभिभावकों के बीच खुला संवाद होता है, वे बच्चे खुले प्रतिस्पर्धा वाले क्रियाकलापों में ज्यादा भाग लेते हैं, ऐसे बच्चे जीवन की समस्याओं को बड़ी आसानी से हल कर लेते हैं.

ADOLESCENCE : THE LAST STEP BEFORE BECOMING AN ADULT

इस अवस्था में "Let them learn from the result of their action" वाली नीति पर काम करना चाहिए अर्थात् उन्हें अपने आप सीखने के अवसर प्रदान करने चाहिए. इस अवस्था में लड़के और लड़कियों का पास-पास होना और उन्हें जानना और समझना विकास का एक हिस्सा है.

DEVELOPMENT PSYCHOLOGY

development psychology मनुष्य के जीवन में हो रहे परिवर्तन के अध्ययन का विज्ञान है. इस विज्ञान के द्वारा बच्चे के जीवन की अनेक अवस्थाओं में हो रहे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, वातावरण ततस बौद्धिक क्षमताओं में हो रहे परिवर्तनों को समझना और उनका विश्लेषण करने की प्रकिया की जाती है. यह field जीवन के विस्तृत area पर नजर डालती है. इसमें skills तथा दुसरे मनो-शारीरिक प्रक्रिया को सीखा और परखा जाता है. दूसरी तरफ cognitive development (ज्ञान विकास) के अन्य क्षेत्रों जैसे - problem solving, moral understanding तथा conceptual understanding पर विचार किया जाता है. तीसरी अवस्था में language acquisition, social

personality तथा emotional development एवं self concept तथा identity formation आदि विषयों से सम्बन्धित क्रियाएं होती हैं.

development psychology द्वारा ज्ञान को धीमे-धीमे इकट्ठा करने की स्थितियों को जांचने का कार्य किया जाता है. बहुत सारे वैज्ञानिक व्यक्तिगत गुणों को परखने तथा उनके द्वारा व्यक्तिगत व्यवहार को समझने की प्रक्रिया को ज्ञात करते हैं. इसके अलावा development psychology अन्य दुसरे क्षेत्रों में भी दखल देकर सीखने और जांचने का कार्य करती है.

Sigmund Feud नामक विज्ञानिक ने मनुष्य के जीवन की 3 अवस्थाओं का वर्णन किया है -

A. Conscious (जागरूक अवस्था)
B. Pre - Conscious (जागरूक होने के पहले की अवस्था)
C. Unconscious (अचेतन अवस्था)

जागरूक या चेतन अवस्था में हमारी मानसिक अवस्था शांत होती हैं. sub-conscious में यद्यपि वर्तमान समय में उन सूचना का इस्तेमाल नहीं किया जाता है पर मस्तिष्क उसे किसी रूप में दिमाग में बनाए रखता है. तीसरी अवस्था unconscious level में उसे कुछ ज्ञात नहीं होता है.

मनोवैज्ञानिक ऐसा मानते हैं कि चेतन और अचेतन के बीच जो तनाव होता है उसका कारण चेतन मन द्वारा व्यक्त न करने और अचेतन द्वारा व्यक्त करने की जदोजहद चला करती है. उसी बात को ध्यान में रखते हुए personality structure तैयार होता है जिसे हम Id, Ego तथा Superego कहते हैं. इनमें से Id सबसे प्राचीन है और यह pleasure (सुच-प्राप्ति) के सिद्धांत पर कार्य करता है. इसका उद्देश्य seek pleasure and avoid pain होता है.
superego जटिल तथा नैतिकता वाला role निभाती है जबकि ego एक संगठित तथा सोचवादी है.

सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जो अनुभव पर निर्भर करती है. इसके कारण व्यक्ति के व्यवहार पर एक तरह का दीर्घकालीन परिवर्तन हो जाता है. learning psychology का मुख्य रूप से मानना है कि पर्यावरण सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है, उनकी शर्तों को तय करता है तथा मनुष्य के व्यवहार को समझने के लिए मनोवैज्ञानिक को बेहद अच्छी सूचनाएं उपलब्ध कराता है.

सीखने की psychology को जानने के लिए प्राचीन काल से प्रयोग व चिन्तन होता रहा है, मुख्य चिंतकों में -

1. SOCRATES

सुकरात ने सीखने की क्रिया का नियम दिया, जिसे piloting कहते हैं. इसका तात्पर्य अपनी शक्तियों का प्रयोग कर हर व्यक्ति उत्तर प्राप्त करना छटा है और उसे सीखता है.

He gives the nation that knowledge comes from within.

2. EBBINGHAUS

एबिंगहौस ने सीखने की प्रक्रिया को लगातार सीखा ख़ास तौर पर memory को शुद्ध या pure form में. pure का तात्पर्य free from meaningful association प्रयोगात्मक रूप से, उसमें स्वयं पर memory के pure form को जानना चाहा. एबिंगहौस ने सीखने का एक अलग तरीका बताया.

Becoming musingly able to recall something as a result of practice and repetition. He is known for the discovery of learning curve and forgetting curve.

3. EDWARD THORDNIK

थॉर्डनाइक ने विभिन्न वास्तविक प्रयोगों तथा विचारात्मक प्रयोगों द्वारा law of effect नाम के सिद्धांत का प्रतिपादन किया.

The law of effect is nation that not only humans but all animals continue to attempt to find a solution to a problem and once found will continuously use the same solution in order to solve the same problem.

PRINCEPLE OF LEARNING

प्रत्येक कार्य को बेहतर करने के कुछ सिद्धांत होते हैं. यदि इन नियमों का सार्थक रूप से पालन किया जाए तो व्यक्ति सफल हो जाता है. इसी प्रकार सीखने के भी कुछ सिद्धांत हैं अगर इन सिद्धांतों से हम परिचित हो जाएँ तो निश्चित तौर पर सीखने की प्रक्रिया को आसान एवं रोचक तथा उपयोगी बनाया जा सकता है. सीखने के सिद्धांत यह दर्शाते हैं कि सीखने वाले को कैसे सीखना चाहिए.

सीखने के सिद्धांत निम्न हैं -

A. सीखना संवेदना का परिणाम है.
B. सीखना क्रिया-कलाप पर आधारित हैं.
C. सीखना पिछले अनुभवों पर आधारित है.
D. सीखने वाला तभी सीखता है जब वह सीखना चाहता है.
E. सीखना सुदृढ है, इसके लिए प्रभावशाली सीख आवश्यक है.
F. उद्देश्य की जागरूकता सीखने के लिए आवश्यक है.

G. प्रभावशाली सीख के लिए सतत् मूल्यांक आवश्यक है.
H. सीखना तभी प्रभावी होगा जब लिखे गए तथ्यों का तुरंत उपयोग किया जाए.
I. प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने की गति अलग-अलग होती है.
J. दक्षता प्राप्त करने के लिए सीखे गए तथ्यों की पुनरावृत्ति आवश्यक है.

NATURE OF LEARNING

अधिगम की प्रकृति को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है.

1. सीखना सम्पूर्ण जीवन चलता है.

सीखने की प्रक्रिया आजीवन चलती है. व्यक्ति अपने जन्म के समय से मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है.

2. सीखना परिवर्तन है.

व्यक्ति अपने और दूसरों के अनुभवों को सीखकर अपने व्यवहार, विचारोबं, इच्छाओं, भावनाओं आदि में परिवर्तन करता है.

3. सीखना अनुकूल है.

सीखना वातावरण को अनुकूल करने के लिए आवश्यक है. सीखकर ही व्यक्ति नै परिस्थितियों में अनुकूलन कर सकता है. जब वह अपने व्यवहार को इनके अनुकूल बना लेता है तभी वह कुछ सीख पाता है.
"सीखने का सम्बन्ध स्थिति के कृत्रिम परिचय से है."

4. सीखना सार्वभौमिक है.

सीखने का गुण केवल मनुष्य में ही नहीं अपितु संसार के सभी जीवधारियों में है.

5. सीखना नए कार्य करना है.

वुडवर्थ के अनुसार - "सीखना कोई नया कार्य करना है पर उसमें एक शर्त लगा दी, उनका कहना है कि सीखना नया कार्य करना है जबकि यह कार्य फिर किया जाए और दूसरे कार्यों में प्रकट हो."

6. सीखना विकास

व्यक्ति अपनी दैनिक क्रियाओं और अनुभवों के आधार के द्वारा कुछ न कुछ सीखता है. फलस्वरूप उसका शारीरिक और मानसिक विकास होता है.

7. सीखना विवेकपूर्ण है.

मार्सेल का कथन है कि - "सीखना यांत्रिक कार्य के बजाय विवेकपूर्ण कार्य है उसी बात को शीघ्रता और सरलता से सीखा जा सकता है जिसमें बुद्धि या विवेक का प्रयोग किया जाता है. बिना सोचे समझे किसी बात को सीखने में सफलता नहीं मिलती."

8. सीखना सक्रिय है.

सक्रिय सीखना ही वास्तविक सीखना है. बालक तभी कुछ सीख पाता है जब वह स्वयं सीखने की प्रक्रिया में भाग लेता है. यही कारण है डाल्टन, प्लान, प्रोजेक्ट, मैथड आदि शिक्षण कीई प्रगतिशील विधियाँ बालक की क्रियाशीलता पर बल देती हैं.

FACTORS (MOTIVATION, INTEREST & ATTITUDE) AFFECTING LEARNING

अधिगम प्रक्रिया मुख्यत अधिगमकर्ता केन्द्रीय होती है. अधिगमकर्ता का सम्यक विकास करना शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य होता है. अतः प्रभावपूर्ण अधिगम के लिए अधिगमकर्ता से संभावित विभिन्न कारकों का विवरण इस प्रकार है.

1. अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा भी अधिगम को प्रभावित करती है क्योंकि मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से स्पष्ट हो गया है कि यदि अधिगमकर्ता किसी पाठ/विषयवस्तु को सीखने के लिए स्वयं अभिप्रेरित है अथवा शिक्षण द्वारा अभिप्रेरित किया गया है तो वह जटिल पाठ / विषयवस्तु को सरलता से सीख लेता है.

2. रूचि

क्रिया, विषय या वस्तु के प्रति पसंदगी रूचि कहलाती है. रूचि अधिगम को प्रभावित करती है. व्यक्ति को सीखने के लिए उसे उस विषय-वस्तु में रूचि होनी चाहिए तभी वह सरलता से सीख सकता है.

3. दृष्टिकोण

यह व्यवसाय प्रशिक्षण का तीसरा मूल तत्व है. प्रशिक्षणार्थी का दृष्टिकोण बढ़ाना जब तक कार्य के प्रति लग्न नहीं है, सीखने की इच्छा नहीं है तब तक सीखना सम्भव नहीं है. सीखने की प्रणाली में मनोविज्ञान का विचार किया जाता है. विद्यार्थी मानसिक रूप से तैयार होना चाहिए. प्रशिक्षण के दौरान स्वयं निष्कर्ष निकालने, औजारों का उचित चयन तथा सावधानीपूर्वक कार्य करने की आदत आदि बातों की अच्छी आदत लगाना दृष्टिकोण बढ़ाना कहते हैं.

सीखना और सिखाना वैज्ञानिक प्रक्रिया है. अतः वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न प्रयोग किये गए और उन प्रयोगों द्वारा निष्कर्ष निकाल कर यह पाया जाता है कि सीखने की प्रक्रिया कुछ सिद्धांतों पर आधारित है और उन सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप से प्रयोग में लाया जा सकता है. इस प्रक्रिया के वंछित परिणाम भी आते हैं. यदि यही सिद्धांतों के माध्यम से शिक्षा दी जाए तो यह प्रक्रिया अधिक प्रभावी बन सकती है. शिक्षा मनोवैज्ञानिक ने अपने आविष्कार तथा अनुभवों के आधार पर ऐसे सिद्धांत बनाए हैं उसमें से कुछ सिद्धांत इस प्रकार हैं -

A. Conditional Response Theory
B. Insight Learning Theory
C. Trial and Error Theory
D. Learning by Imitation Theory

प्रतिबंधित प्रतिक्रिया का सिद्धांत

इस सिद्धांत में उत्तेजना को अनुक्रिया प्राप्त करने के लिए मुख्य घटक के रूप में स्वीकार किया गया है. प्रसिद्ध मनिवैज्ञानिक 'पावलव' ने 1904 ई० में अपना सिद्धांत दिया था. उसमें उन्होंने कहा था कि उद्दीपन या उत्तेजना के साथ होने वाली प्रतिक्रिया एक दूसरे से सम्बन्धित होती है.

पावलव का प्रयोग

पावलव ने अपने कुत्ते के लिए एक कुत्ते का प्रयोग किया. निश्चित अंतराल के बाद उस कुत्ते को खाने की थाली दी जाती थी. थाली देने के कुछ समय पूर्व घंटी बजाई जाती थी. इस पप्रक्रिया को नियमानुसार रोजाना दोहराया जाता था. घंटी की आवाज सुनते ही कुत्ता खाने की अपेक्षा करता था और उसके मुँह से लार टपकने लगती थी. कुत्ते की लार टपकने से उद्दीपन का सम्बन्ध घंटी बजने की उत्तेजना से था और खाने की अपेक्षा यह अनुक्रिया थी. इस प्रयोग का तात्पर्य यह है कि किसी भी चीज को बार-बार दोहराने आदत बन जाती है और अनुक्रिया अपने आप प्राप्त होती है.

अंतदृष्टि अधिगम सिद्धांत

हर व्यक्ति अपने अनुभव के आधार पर तथा तत्कालिक परिवेश की सहयोग से कुछ बातें सीख्र है. इसी प्रकार 'गेस्टाल्ट' (Gestalt) ने बताया - मनुष्य किसी समस्या का हल निकालने के लिए स्वयं अनुभवों, ज्ञान के जरिए प्रयास करता है. प्रयास के दौरान कुछ नए सिद्धांतों या कल्पना पर विचार प्राप्त करता है और समस्या का हल निकालने में सफल हो जाता है. ऐसी सफलता ज्ञान अवधारणा के लिए ज्यादा सहायताकारी होती है. किसी भी समस्या का बोध होने उस पर कल्पना शक्ति के जरिए नया विचार या हल निकालने की प्रक्रिया को अंतदृष्टि कहते हैं. इस पद्धति से प्रतिबंधित अनुक्रिया या भूल प्रयास जैसे अन्य सिद्धांतों को kohler द्वारा प्रयोग से स्पष्ट किया गया है.

कोहलर का प्रयोग

इस प्रयोग में चिम्पांजी बंदरों का प्रयोग किया गया था. एक पिजरे में चिम्पांजी बंदरों को बंद करके रखा गया. उस पिंजरे के ऊपर कुछ केले लटकाए गए जो चिम्पांजी के हाँथ की पहुँच से दूर थे. हाँथ न पहुँचने पर चिम्पांजी ने छड़ी का प्रयोग किया मगर केले तक नहीं पहुँच पाया. फिर इस चिम्पांजी ने दूसरी छड़ी फंसाकर बॉक्स खिसकाकर केले के नीचे लाया फिर उस पर चढ़ कर छड़ी की मदद ली और केले हासिल किये. अपना पुराना अनुभव याद किया और तुरंत हल निकाला और सफलता हासिल की.

अनुभव से कुछ बातें सीखने का अवसर देना चाहिए. ऐसी सीखी बातें प्रशिक्षणार्थी ठीक समझ पाते हैं और लम्बे समय तक ध्यान में रखते हैं. व्यवसाय प्रशिक्षण में इस सिद्धांत का प्रयोग ज्यादा उपयुक्त होगा.

भूल-प्रयास का सिद्धांत

विशेष उद्देश्य या लक्ष्य हासिल करने के लिए हम हमेशा प्रयास करते हैं. मगर प्रथम प्रयास में गलतियाँ होती हैं उसे सुधार कर पुनः प्रयास किया जाता है. ऐसा बार-बार करने से लक्ष्य की प्राप्ति होती है. इस सिद्धांत को भूल-प्रयास सिद्धांत कहते हैं.

थोर्नडाइक का प्रयोग

थोर्नडाइक ने इस सिद्धांत को समझने के लिए एक प्रयोग बताया है. उन्होंने प्रयोग के दौरान एक बिल्ली को पेटी में बंद रखा. उस पेटी का दरवाजा एक पट्टी पर हल्का सा दबाव होने से खुलता था. उस दरवाजे को बाहर खाने के लिए रखा गया. बिल्ली पेटी से बाहर आने का प्रयास कर रही है. बहुत सारे प्रयास विफल रहे पर अचानक से एक ख़ास पट्टी पर दबाव पड़ने से दरवाजा खुल गया और बिल्ली बाहर आ गई. कई बार बिल्ली को इस प्रकार के पेटी के अंदर रखा गया. बिल्ली बार-बार कुछ प्रयासों के पश्चात् सफल होती रही. किन्तु कुछ समय के बाद वह बिना असफल प्रयास के सफल होने लगी. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इस सिद्धांत का बड़ा महत्व है. विद्यार्थी पूर्व अनुभवों के आधार पर कुछ समस्या हल करने की कोशिश करते हैं, गलतियाँ होती हैं तो अपनी जानकारी के आधार पर भूल समझने की कोशिश करते हैं फिर प्रयास करते हैं और अंत में सही पद्धति या हल ज्ञात हो जाता है. इस प्रकार की शिक्षा विद्यार्थी को प्रोत्साहित करती है और इससे विद्यार्थी को पढ़ने में रूचि बढ़ती है.

क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धांत

स्किनर ने अपने सिद्धांत में स्पष्ट किया है कि प्रारम्भ में जब प्राणी उद्दीपन के प्रति अनुक्रिया करता है जिसमें यसे सफलता मिल जाती है. इस सफलता से उसे पुनर्बल प्राप्त होता है. इससे उस प्राणी की अनुक्रिया एवं सफलता में अनुबंध न होता है जिससे वह सीख लेता है. इस प्रकार सीखने की क्रिया को 'क्रिया प्रसूत अनुबन्धन' कहा जाता है.

स्किनर का चूहे पर प्रयोग

एक चूहे को एक बॉक्स में बंद कर दिया जिसमें लीवर दबने से भोजन नली के द्वारा कप में आ जाता है. जब भूखा चूहा उछलने लगा तो पंजे से लीवर दब जाता है, खट की आवाज आती है और आवाज सुनकर चूहा आगे बढ़ता है भोजन मिल जाता है उसे खाकर उसे संतुष्टि मिलती है क्योंकि भोजन उसे पुनर्बल प्रदान करता है. स्किनर ने यह प्रक्रिया चूहे पर बार-बार दोहराई जिससे एक स्थिति आ गई जब चूहे ने पिजरे में पहुँचते ही लीवर दबाकर भोजन पा लिया अर्थात् चूहे ने लीवर दबाकर भोजन प्राप्त करने की प्रक्रिया सीख ली.

स्किनर ने क्रिया प्रसूत सिद्धांत की व्याख्या इस प्रकार है -

"यदि क्रिया प्रसूत अनुक्रिया के उपरान्त पुनर्बलित उद्दीपक दिया जाता है तो इससे उसकी शक्ति बढ़ जाती है."

यह एक ज्ञात तथ्य है कि कोई भी दो व्यक्ति किन्ही दो बातों पर समान नहीं हो सकते हैं. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्रशिक्षणार्थियों को ध्यान में रखकर शिक्षा सम्बन्धी निर्णय लिए जाते हैं. इनमें मुख्य रूप से कुछ बातों को ध्यान में रखा जाता है. जैसे -प्रशिक्षणार्थी क्या चाहता है? उसे किस पद्धति में पढ़ाना चाहिए? उसकी अपनी योयता क्या है? वह किस गति से पढ़ता है? उसके पूर्व अनुभव क्या हैं? इन सब बातों को जांचने का महत्वपूर्ण कारण यह है कि हर विद्यार्थी एक-दूसरे से अलग होता है. विज्ञान की भाषा में इस अलगता को व्यक्तिगत भिन्नताएँ कहा जाता है. ज्यादातर शिक्षक सामान्य स्टे के विद्यार्थी को सामने रखकर पढ़ाने की क्रिया करते हैं. इसका परिणाम यह होता है कि तेज बुद्धि के छात्र उसी बात को आसानी से समझ लेते हैं किन्तु बहुत से छात्र मुख्य बिंदु को पूरी तरह से नहीं समझ पाते हैं. आधुनिक शिक्षा पद्धति में इन्हीं व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण प्रक्रिया चलाई जा रही है.
व्यक्तिगत भिन्नताएँ निम्न रूप में होती हैं -

Physical Differences

शारीरिक संरचना का मानसिक प्रक्रति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है. शरीर हमेशा मानसिक दृष्टि से सक्रिय रहता है. अपंग (handicapped or physically challenged) व्यक्ति में हमेशा हीनता की भावना रहती है. इसी प्रकार male और female की शारीरिक संरचना में अंतर हैं. इसका सीधा असर उनके सीखने की क्षमता पर पड़ता है.

Mental Differences

व्यक्ति की मानसिक भिन्नता का स्तर अलग-अलग होता है. जैसे व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता में बड़ा अंतर होता है. मंद बुद्धि के विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास की कमी होती है जो उसके सीखने की क्रिया को काफी हद तक कमजोर करती है. वहीँ पर तेज या प्रखर बुद्धि के विद्यार्थियों का आत्म-विश्वास बहुत ज्यादा होता है. अतः इस कारण ये विद्यार्थी हर छोटी-छोटी बात को बड़ी आसानी से ग्रहण करते हैं. इसी प्रकार हर व्यक्ति की रूचि या interest में भी भिन्नता पाई जाती है. किसी को वैचारिक बातों में रूचि होती है तो किसी को व्यवहारिक बातों में रूचि होती है. इसी प्रकार इच्छा शक्ति, मूल-प्रवृत्ति में भी भिन्नता पाई जाती है.

Environmental Differences

विद्यार्थी अलग-अलग वातावरण से आते हैं. जैसे कुछ छात्र पूर्ण रूप से ग्रामवासी होते हैं तो कुछ कसबे से जुड़े होते हैं और बहुत से छात्र शहरी क्षेत्रों से जुड़े होते हैं. इस कारण उनमें भिन्नताएँ उपस्थित हो जाती हैं. ग्रामीण इलाकों से जुड़े लोग सामाजिकता को पसंद करते हैं. शहरी क्षेत्र के लोगों को सामाजिकता की अपेक्षा एकांत पसंद होता है इसलिए वे ज्यादा समय एकांत में रहकर शिक्षा ग्रहण करते हैं और वे औरों से ज्यादा तेज निकल जाते हैं.

Emotional Differences

भावनात्मक रूप से विद्यार्थियों में बड़ा अंतर पाया जाता है. भावनात्मक रूप से कुछ छात्र अधिक उत्साही होते हैं. कुछ छात्र दयावान होते हैं तो कुछ छात्र कठोर प्रवृत्ति के होते हैं. उत्साही व्यक्ति सीखने की प्रक्रिया को बेहतर तरीके से कर सकते हैं या करते हैं.

Cultural Differences

धर्म, भाषा, परिवार तथा अन्य कारणों का सीखने वाले पर प्रभाव पड़ता है. इस सब बातों का learner के मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव पड़ता है. इब सब बातों का विद्यार्थी पर प्रभाव स्वभाव में परिलक्षित होता है. विभिन्नताओं को सामने रखकर शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया करनी चाहिए.

A. विद्यार्थी की भिन्नता समझकर उस भिन्नता के आधार पर समूह का वर्गीकरण करना चाहिए.
B. साधारण बुद्धि के विद्यार्थी को अलग से अधिक सुलभ पद्धति में जानकारी देनी चाहिए.
C. तीव्र बुद्धि के विद्यार्थियों को अतिरिक्त कार्य देकर व्यस्त रखने की आवश्यकता होती है.
D. कक्षा में जो भी विषय-वास्तु पढ़ाई जाए उसे पुनः दोहराए जाने की आवश्यकता होती है.
E. विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूचि को ध्यान में रखकर पढ़ाने की प्रक्रिया करनी चाहिए.
F. विद्यार्थी की रूचि को देखकर पाठ्य-सामग्री का निर्धारण करना चाहिए साथ ही पाठ्य-सामग्री अधिक मात्रा में उपयोग करना चाहिए.

Psychology of Learning : Concept and Determinant of Motivation

मानव जीवन विभिन्न प्रकार की विचित्रताओं से भरा हुआ है. कभी-कभी व्यक्ति किसी कार्य को करने में विशेष रूचि लेता है और कभी-कभी वह कार्य अरुचिकर लगने लगता है परन्तु व्यक्ति के मन में विशेष भाव उत्पन्न हो सकते हैं जिससे वह उस कार्य को करने के लिए प्रेरित होता है. अतः अच्छे कार्यों को करने के लिए व्यक्ति के मन में विशेष भाव उत्पन्न होने या करने की क्रिया को प्रेरणा कहते हैं.

प्रेरणा को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है -

1. **प्राकृतिक प्रेरणा (Natural Motivation)**

जब व्यक्ति को किसी कार्य को बेहतर रूप से करने की प्रेरणा स्वतः रूप से उत्पन्न होती है ततो वह प्राकृतिक प्रेरणा कहलाती है.

2. **बनावटी प्रेरणा (Artificial Motivation)**

जब व्यक्ति को बेहतर ढंग से कार्य करने की प्रेरणा बाह्य कारणों द्वारा होती है तो उसे बनावटी प्रेरणा कहते है.

प्रेरणा हमारे सीखने की क्रिया को प्रभावित करती है. शिक्षक पठन-पाठन की क्रिया में पढ़ाने के तरीके से तथा अन्य संसाधनों का उचित उपयोग करके प्रेरित करता है कि सीखने की प्रक्रिया सुदृढ हो. सीखने की प्रक्रिया को 2 तरह से लागू किया जाता है.

A. सकरात्मक सुदृढकरण
B. नकरात्मक सुदृढकरण

पहले प्रयत्न में सफल होने पर आगे के प्रयत्नों में सफल होने की आशा में स्सिखने की जो प्रेरणा उत्पन्न होती है जो सीख को सुदृढ करती है, सकरात्मक सुदृढकरण कहलाती है.

प्रथम प्रयास में असफल होने पर असफलता का भय सीखने की बाधा को प्रस्तुत करता है जो सीख को नकरात्मक बनाता हैं, नकरात्मक सुदृढकरण कहलाती है.

प्रेरणा जाग्रत करने के तरीके एवं विधियाँ हैं -

A. पुरस्कार (reward)
B. दण्ड (punishment)
C. प्रशंसा (praise)
D. आलोचनाएं (criticism)
E. विद्यार्थियों की प्रतियोगिता (competition among the trainees)
F. शिक्षकों का व्यक्तित्व एवं व्यवहार (personality and behavior of teachers)
G. मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ (psychological methods of teaching)

प्रेरणा जाग्रत करने के निम्नलिखित स्त्रोत हैं -

A. अच्छा अनुदेशक
B. अनुकूल स्थिति

C. सभी सम्बन्धित व्यक्ति का प्रशिक्षणार्थी के प्रति उत्साहपूर्ण दृष्टिकोण
D. सीखने की जिज्ञासा
E. प्रसंशा की इच्छा
F. स्पर्धा की भावना

शिक्षण प्रक्रिया का अगर एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण विषय है तो वह है - क्लासरूम का मैनेजमेंट. आप अपने student को सफलतापूर्वक तब तक नहीं पढ़ा सकते जब तक आप स्वयं control में न हों. यही चिंता आपके प्रिंसिपल तथा छात्रों के अभिभावकों की होती है. बहुत सारे टीचर्स को अपना जॉब इसलिए छोड़ना पड़ा कि उनका क्लासरूम मैनेजमेंट बहुत खराब था.

क्लासरूम में अनुशासन न होने के कई कारण हो सकते हैं. इसका एक कारण अपनी teaching style हो सकती है. यदि आप अपने हर एक छात्र के पास नहीं पहुँचते हैं तो वे बोर महसूस कर सकते हैं. उसके बाद वे अरुचि महसूस करेंगे और अंत में बेचैन महसूस करेंगे. जैसा कि पहले भी आपको बताया जा चुका है कि हर student को अपनी सीखने की style होती है तथा एक area (क्षेत्र) होता है जहाँ वे बहुत अच्छे होते हैं. अगर आप इन छात्रों के पास विभिन्न तरीकों से पहुँचते हैं तो वे प्रेरित महसूस करते हैं और क्लासरूम में कम परेशानी उत्पन्न करते हैं.

classroom में discipline न होने का दूसरा कारण आपका क्लासरूम में student के साथ deal करते समय personal problem शामिल करना हो सकता है. student की बहुत सारी समस्याएँ जो unresolved रह जाती हैं उसका गुस्सा वे क्लासरूम में निकालते हैं. ऐसी स्थिति में आप proper authorities को वस्तु-स्थिति से अवगत करा सकते हैं.

Following are a few strategies to deal with troubled students -

A. परेशान करने वाले छात्र को काउंसलर के पास भेजें. वह छात्र से बात कर उसकी समस्या का समाधान निकालेगा.
B. किसी गैंग के सदस्य के रूप में कार्य करने वाले student को एडमिनिस्ट्रेशन के पास refer करें.

आपका उच्च अधिकारी (principal) हमेशा चाहेगा कि आप अनुशासन की समस्याओं को स्वयं देखें भालें और बहुत खराब व्यवहार वाले छात्र या फिर आदतन अपराध करने वाले छात्रों को उच्च अधिकारियों तक ले जाएँ. क्लास में मात्र बात करने वाले student को higher suthorities के पास नहीं भेजना चाहिए. कई बार प्रिंसिपल को कहते सुना होगा कि, हाँ यह student थोड़े ही problem पैदा करता है किन्तु अन्य teacher उसकी समस्या को handle कर लेते हैं यानि वह आपसे भी उम्मीद नहीं करता है कि इस समस्या को आप handle करें.

दुर्भाग्य से discipline के मसले पर बहुत सारी philosophies तथा styles हैं. आपको लिए जो अच्छी है जरूरी नहीं वह दूसरों के लिए भी अच्छी होगी. सबसे अच्छी बात यह होगी कि आप इनमें से सबसे सफल होने वाली को चुनें. क्लासरूम के सफल प्रबन्धन के लिए यह महत्वपूर्ण होगा कि क्लासरूम के लिए clear set of procedure होना चाहिए. यदि students को यह ज्ञात होगा कि उन्हें क्या करना है तो वह रोजाना के set procedure को फॉलो करने लगेंगे.

Golden rules about classroom management -

- Ensure that you have clearly stated rules and procedures with established consequences that one expected and reviewed regularly.
- All students must know the rules, routines and expectations.
- Never continue on with instruction when the rules are being broken - pause, delay and ensure that you have your student's attention.
- Be sure that your instructional periods are not too long.
- Provide individual, personal cueing and prompts to certain students as needed.
- Sometimes just touching a student's shoulder will bring them back to task.

- Make sure you are teaching to all the various learning styles your students have. A student who is not being more likely to be a problem.

1) Transactional Analysis (TA)

यह एक ऐसा प्रोग्राम है जो Dr. Eric Berne के सिद्धांत पर आधारित है उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में एक बच्चा (child), adult तथा parent का मनोविज्ञान होता है. students तथा teachers हमेशा adult डोमेन (व्यस्क) क्षेत्र) में रहना चाहते हैं. समस्याओं को co-operation और good will से हल किया जाता है. like discipline with dignity, there is a strong focus on self esteem and motivation.

There are seven components to T.A. they are -

1. I'm ok, you're ok

Teachers treat students as being ok, inspire of any discipline. Assume that students are capable of change in the result circumstances.

2. Strokes

All people need recognition and positive feedback or strokes. T.A. works on collimating unhealthy patterns of stroking and both positive and negative strokes.

3. Ego States

Dr. Berne believes that there are three ego states humans have. They are the parent, the adult and the child. Each ego state determines the type of interaction between two people. For example, if a teacher is in a parent mode and the student is in a child mode, conflict is sure to result. Teaches communication can control the mode of conversation.

4. Transactions

This refers to communication between two people. Teachers should recognize which ego states students are communicating from and follow a sequences to move students into a different mode.

5. Games People Play

This refers to dysfunctional behavior. Much of this has been learned in dysfunctional families. Theses dysfunctional games are played to obtain strokes, but instead reinforce negative self-concepts. The T.A. manual identifies these games and tells how to terminate the games. Some of the games include, "Yes, but..,", "Why don't you..." and "I'm only trying to help."

6. Life Script

Dr. Berne proposes that dysfunctional behaviors is the result of decisions made in childhood in order to survive. This is the 'lifescript' a student plays and is difficult to break. T.A. strategies

sim to break him behaviors by changing the child's script to co-operation.

7. Contracts

Student change is brought about through contracts. These contracts are developed through a collaboration between the teacher and the student. This assumes that students are capable of deciding what they want for their lives.

2) Teacher Effectiveness Training (TET)

TET was created by Dr. Thomas Gordon and Ken Miller. The purpose of TET is to increase time on task. There are seven behavioral skills that are taught in a TET classroom.

A. Behavioral Observation
B. Identifying Problem Ownership
C. Demonstrating Understanding
D. Being Understood
E. Expressing Recognition
F. Confrontation
G. Win / Win Problem Solving

There is also a TET curriculum design that is based on a four step learning model called the systemic implications of a pedagogy and achievement (SIPA).

A. Learning activities are structured.
B. Students are involved in activity.
C. They communicate about and process their personal experience with others.
D. They analyze and generalize for purpose of application to their classroom.